आज़ादी के 70 साल के उपलक्ष में विद्वानों की एक परिचर्चा

'आज़ादी के विविध आयाम'

इंस्टिट्यूट ऑफ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली, और इंडियालॉग फाउंडेशन, नयी दिल्ली, के सयुक्त तत्वावधान में इंडियालॉग फाउंडेशन, नयी दिल्ली, के सभा कक्ष में 16 सितंबर 2017 को एक परिचर्चा आयोजित की गयी थी। परिचर्चा का विषय था 'आज़ादी के विविध आयाम'। परिचर्चा के मेज़बान और इंडियालॉग फाउंडेशन, नयी दिल्ली, के निदेशक श्री बिलाल एसिकगोज़ ने शुरूआत में मौजूद विद्वानों का स्वागत किया और कार्यक्रम के अंत में उनका आभार भी माना। परिचर्चा की अध्यक्षता और संचालन डॉ. एम. डी. थॉमस, संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली, ने की।

परिचर्चा में प्रो. दीपाली भानोट, प्रो. शशि तिवारी, प्रो. हेमलता माहीश्वर, श्रीमती लिप्सा मोहंती, एडवोकेट मोनिका शर्मा, श्री सुनील कुमार, जनाब गुलाम रसूल देहलवी, श्री एस. जी. तिवारी, श्री नेत राम नारायण, जनाब एम. बेहज़ाद फातमी, श्री नवीन चंद्र, जनाब बिलाल एसिकगोज़ और डॉ. एम. डी. थॉमस ने भाग लिया। इस परिचर्चा की योजना एक कार्यशाला के रूप में बनायी गयी थी और सिर्फ कुछ चयनित विद्वानों के दरम्यान ही आयोजित की गयी थी। यह इसलिए था कि विषय का विश्लेषण कुछ गहराई और समग्रता से किया जा सके।

परिचर्चा के अध्यक्ष डॉ. एम. डी. थॉमस ने परिचर्चा की भूमिका के रूप में कहा कि 70 सालों से आज़ाद होकर भी भारत के हम लोग कतिपय मामलों में पहले से भी ज़्यादा गुलाम हैं, यही सच है। हम लोग पड़ोसी से तो आज़ाद हुए, लेकिन बड़ी मत्राओं में अपने या अपनो के गुलाम बने हुए हैं, जो कि ज़ाहिर तौर पर बदतर हालत है। आज़ादी और गुलामी एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं और इन्हें कर्तव्य और अधिकार के बीच तालमेल से जोड़कर समझाा जाना चाहिए। निजता हर शख्स और समुदाय का हक है और वही आज़ादी की बुनियाद भी है। ज़िंदगी सुचारू रूप से चले, इसके लिए निजता और आज़ादी के साथ खिलवाड़ न हो, यह दरकार है। उम्र, लिंग, काल, मज़हब, आदि की आड़ में पल रही गुलामी के तहों में आज़ादी की रौशनी फैलाने की ज़रूरत है। इसके अलावा, आज़ादी को मनमानी और तानाशाही के हद तक न ले जाया जाय, बल्कि ज़िम्मेदारी के रूप में समझाा जाय, यही कायदा है। इन्सान को हर मायने में आज़ाद करने की मुहिम चलती रहे, देश की बेहतरी बस इसी में मौजूद है।

उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता श्रीमती मोनिका शर्मा ने कहा कि आज़ादी की लड़ाई में अंगेज़ों से आज़ाद होना लक्ष्य था और इसलिए काफी अनाड़ी होकर भी भारतवासियों की सोच में संतुलन के साथ-साथ दिशा, स्पष्टता और एकजुटता थी। साथ ही, भारत का नये सिरे से निर्माण करने की इस ललक में सभी समुदायों का योगदान भी था। अब हमारे देश में साक्षरता का दर बढ़ा है। लेकिन, हम लोग मौलिक परंपराओं को किनारे करते हुए भी स्वच्छद आज़ादी को पाने की हौड़ में हैं, जो कि नामुमकिन और नाजायज ही नहीं, दिशाहीन भी है। हम लोग अधिकारों की बात तो बहुत खूब करते हैं, लेकिन कर्तव्य से दूर भी रहना चाहते हैं, यही विड़ंबना है। इन्सानियत के मूल्यों से दूर रह कर असली आज़ादी का लक्ष्य कभी भी कारगर नहीं हो सकता। आज़ादी की सोच से तंगहाली, स्वच्छंदता और बिखराव को हटाकर खुलापन, परिपक्वता और सबका साथ होने का भाव भरना ज़रूरी है। आखिर, सकारात्मक आज़ादी ही फलदायक होगी।

जामिया मिलिया इस्लामिया केंद्रीय विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली, के हिंदी विभाग के प्रमुख प्रो. हेमलता माहीश्वर ने कहा कि हमें यह समझाना होगा कि आज़ादी क्या है और किससे हासिल करनी है? भेद-भाव और छुआछूत की गुलामी से छुटकारा पाना

सही मायने में आज़ादी है। राजसत्ता की चंगुल से आज़ाद होकर लोकतांत्रिक परंपरा में आना भी आज़ादी है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान ज्योतिबा फूले और डॉ. अंबेडकर ने समाज में मौजूद भेदभाव को कम करने के लिए काफी काम किया। लेकिन, इस समय हमारे राजनेताओं के पास इच्छा शक्ति की बड़ी किल्लत है। इतना ही नहीं, ज़िम्मेदारी से भागना आम स्वभाव बना हुआ है। धर्म कोरी कहानियों, रूढ़ियों और कर्मकाण्ड के शिकार होकर बड़े पैमाने पर समाज के लिए बोझा बना हुआ है। माता-पिता अपने बच्चों को धर्म के बारे में सही जानकारी नहीं दे पा रहे हैं। लोग धर्म-ग्रथों और परंपराओं की, खास तौर पर गलत संदर्भों की, गुलाम बन गये हैं। नयी व्याख्याओं के साथ-साथ बदलाव की कोशिशों से ही बराबरी और ज़िम्मेदारी से युक्त आज़ादी का सफर तय हो सकता है।

विज्ञान के क्षेत्र के विद्वान श्री एस. जी. तिवारी ने कहा कि धर्म मूल रूप से अच्छा ही है। कोई भी धर्म हमें यह नहीं सिखाता कि हम मानव से घृणा करें। वास्तव में मानव धर्म ही इन्सान का धर्म है, जो उसे प्यार करना सिखाता है। लेकिन, कर्मकांडों में फँसे रहने के कारण हम लोग उसे पहचान नहीं पाते हैं और धर्म के नाम पर भी औरों से फासला रखने लगते हैं। आज़ादी के आंदोलन में सभी धर्मों के लोग एकजुट थे। हमारा संविधान भी अच्छा बना है। लेकिन, हम इसे सही तरीके से लागू नहीं कर पा रहे हैं। अतिवादी सोच की वजह से बहुतों को दूसरे धर्म के लोगों को सहन करने में तकलीफ हो रही है। हमें असहिष्णुता से आज़ाद होना होगा और एक दूसरे का सम्मान करना होगा। आपने यह भी कहा कि अंग्रेज़ों के ज़माने का काम पक्का और टिकाऊ था और आज़ाद भारत का हल्का और नकली, जिसके सबूत हमारी चारों ओर हैं। असली आज़ादी हासिल करने के लिए हमें कारीगरी की कुशलता और गुणवत्ता से समझौता नहीं करने की अंग्रेज़ों की मानसिकता से सीख लेने की सख्त ज़रूरत है।

दिल्ली विश्व विद्यालय, नयी दिल्ली, के पूर्व प्रोफेसर दीपाली भानोट ने कहा कि मानवता से ही आज़ादी चाहने लगे हैं। हमारा प्राथमिक धर्म स्वधर्म है, जिसका हमने त्याग दिया है। परिवार और समाज के प्रति हमारा धर्म है, जिसे हम नहीं निभा रहे हैं। हम रूढ़ीवाद को एक हथियार के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। हम दलित और स्त्री वर्ग को दबाते हैं। हम गलत सोच के गुलाम हो गये हैं। अलग मत रखने वालों को समाज में जगह नहीं देने की हौड़-सी बनी हुई है। ज्यादातर लोग धार्मिक गुरुओं के गुलाम होने के साथ-साथ नकली बाबाओं के गिरफ्त में फँसे हुए हैं। समाज द्वारा अस्वीकार किये जाने के डर से लोग गलत परंपराओं से समझौता किये जा रहे हैं। मैला ढ़ोने की प्रथा समाज में अभी भी बरकरार है। ताकत का गलत उपयोग किया जा रहा है। बोलने की आज़ादी छीन ली गयी है। लोग घेराबंदियों में कैद होकर और दूसरों में दुश्मन देखकर इन्सानियत से ही बेपटरी होने लगे हैं। नफरत फैलानेवाली इन प्रवृत्तियों और विड़ंबनाओं से खुद को और देश को आज़ाद कराना वक्त का तकाज़ा है।

इस्लाम व विद्वान श्री गुलाम रसूल देहलवी ने कहा कि आज़ादी के पहले जिस्मानी तौर पर अंग्रेजों के गुलाम होकर भी हम ज़हनी और दिमागी तौर पर आज़ाद थे। स्वतंत्रता सेनानियों के दरमियान एक सर्व-धर्म के मेल-जोल का गज़ब का भाव था, जो कि इस वक्त बहुत कमज़ोर हो गया है। 1857 के प्रथम विद्रोह के दौरान हिंदू शासकों ने बहादुर शाह ज़फर को अपना प्रधान चुना था। आज के सिरफिरे राष्ट्रवाद में ज़बर्दस्त गुलामी का भाव है, जो कि हमारे मुल्क के लिए बेहद खतरनाक है। मौजूदा माहौल में देश कट्टर सांप्रदायिकता और एक्तरफा सियासत का शिकार है। आज़ादी के 70 सालों के बाद सियासत के ठेकेदारों को अपने गिरेबान में झाँकने की ज़रूरत है और अपने पूर्वजों से सीखना चाहिए।

कॉरपोरेट आश्रम, फरीदाबाद, के निदेशक श्रीमती लिप्सा मोहंती ने कहा कि आज़ादी के बाद भारत में उद्योग और व्यापार का विकास हुआ है। पर, ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए हमने मूल्यों के साथ समझौता किया है। यहाँ तक कि हम यह भी नहीं जान पा रहे हैं कि सही और गलत क्या है। हम अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। हम काम, क्रोध, ईर्ष्या और लोभ में प से हुए हैं। लोग अपने अहम् के ही गुलाम होते जा रहे हैं और बगैर कानून-कायदे से जीवन में पेश होते आ रहे हैं। देश और समाज की विरासत ही किनारे हो रही है। नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को सवाल करने भी लगी है। नयी-पुरानी पीढ़ियों में दूरी

भी बढ़ती जा रही है। इन कमियों को दूर करने के लिए हमें अपने-अपने परिवार से ही प्रयास शुरू करने की ज़रूरत है। बच्चों को सही ज्ञान देने से ही हम भविष्य को दुरुस्त कर सकते हैं।

आई.सी. सेंटर फॉर गवरनंस, नयी दिल्ली, के अध्यक्ष श्री सुनील कुमार ने कहा कि आज़ादी को सही मायने में समझाने के लिए दुनिया के स्तर की व्यापक दृष्टि की ज़रूरत है, जो कि कुल मिलाकर कमज़ोर है। हम लोग यह नहीं जान पा रहे हैं कि अच्छे और बेहतर की तरप कैसे जाएँ। बराबरी की भावना को अपनाये बगैर आज़ादी की ओर जाना संभव नहीं है। भारत में, पूरी दुनिया में भी, धर्म, अध्यात्म और लोकतंत्र के साथ कुछ अछूत का भाव विकसित हो रहा है, जो कि एक अच्छा लक्षण नहीं है। आजकल लोकतंत्र एक विभाजक तत्व हो गया है। समाज का विकास तो हो रहा है, लेकिन समाज में वर्ग को लेकर ऊच-नीच का भाव अभी भी भरपूर मौजूद है। जीव और आत्मा के बीच संबंध का अभाव है। आज़ादी हासिल करने के लिए अपने मन की सफाई के साथ-साथ औरों के साथ लेन-देन और तालमेल अत्यंत आवश्यक है।

वेव्स इंडिया के महासचिव प्रोफेसर शशि तिवारी ने कहा कि आज़ादी के 70 सालों के बाद हम अपने अधिकारों की ओर बहुत सचेत हो रहे हैं, लेकिन हमने कर्तव्यों को किनारे करते भी जा रहे हैं। इस लिए हम लोग आज़ादी के उद्देश्य से दूर हो गये हैं। स्वतंत्रता का मतलब अपना तंत्र लागू करना नहीं होता है, जो कि आजकल चल रहा है। हमें इतिहास से सीखने की ज़रूरत है। लोग धर्म का असली मतलब भूल गये हैं। अध्यात्म का मतलब सभी धर्मों में एक-सा ही होता है। पुर्वाग्रहों की वजह से समाज में भेदभाव बढ़ा है। विकास भी इन्सानियत और धर्म के गुणों से बिछुड़कर काफी कुछ एकतरफ़ा हो गया है। फिर भी, हमें इस उम्मीद को लेकर आशावादी बने रहना है कि हमारे आगे की पीढियाँ इन कमियों को पूरा करेगी और मानव धर्म में निखार लायेंगी।

बाल्मिकी फाउंडेशन, नयी दिल्ली, के सचिव श्री नत राम नारायण ने कहा कि आज़ादी के बाद समाज में एकता के बदले अनेकता का भाव अधिक हुआ है। पारिवारिक स्तर पर भी समन्वय का अभाव है। बच्चे बहुत कुछ माता-पिता की लिहाज़ करने से चूक जाते हैं। समाज के बहुसंख्यक समुदाय अल्पसंख्यकों पर अत्याचार कर रहे हैं और उन्हें मार रहे हैं। वह ताकत का इस्तेमाल उन लोगों पर कर रहा है, जिनके पास ताकत नहीं है। मानवता खत्म हो रही है और इन्सानियत कमज़ोर हो रही है। सरकार का तंत्र भी इन गलत लोगों का साथ दे रहा है। न्याय प्रकिया भी बेहद दोषपूर्ण हो गयी है। श्री नारायण ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि धर्म-परिवर्तन छोटे तबकों के उन लोगों ने किया जो समाज के द्वारा दबाये गये होने पर परेशान थे। जन्म को लेकर जताया जा रहा बड़प्पन कब तक झोला जाय! आखिर, डॉ. अंबेड़कर ने, जिन्होंने भारत का संविधान बनाया था, आज़ाद भारत में धर्म-परिवर्तन क्यों किया? सरकार या और किसी ताकत को जो बेहतर की तलाश में खुद को किसी भी मामले में बदलना चाहता है उसे रोकना नहीं चाहिए। यह आज़ादी हर इन्सान के लिए अहम् है।

इंडियालॉग फाउंडेशन, नयी दिल्ली, व सदस्य श्री एम. बेहज़ाद फातमी ने राजनीतिक स्वतंत्रता की ओर सभा का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होने कहा कि राजनितिक आज़ादी का सही प्रयोग होना चाहिए। उसके दुरुपयोग से गुलामी फिर छायेगी और इसलिये इसे रोकना चाहिए। इंस्टिट्यूट ऑफ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली, के सदस्य श्री नवीन चंद्र ने समाज के उच्च तबके के लोगों की ब्राह्मणवादी या बर्चस्ववादी सोच का जिक्र करते हुए कहा कि प्राचीन काल से ही यह सोच हमारे समाज में मौजूद रही है और यह समाज के विकास में बाधक भी रही है। यह सोच सिर्फ अपने और अपनों की विकास की बात करती है। भारत का मौजूदा माहौल इस सोच से बहुत प्रभावित है और समग्र विकास के लिए इस सोच में तब्दीली की बेहद ज़रूरत है।

इंडियालॉग फाउंडेशन, नयो दिल्ली, के अध्यक्ष श्री बिलाल एसिकगोज़ ने कहा कि भारत विविधता में एकता का देश है। 'वसुदैवकुटुंबकम्' यहाँ की आदर्श उक्ति होती है। लेकिन, खास रूप से जाति, वर्ग, धर्म, आदि में मौजूद विविधता के कारण समस्यायें पैदा होती हैं। दिक्कत तब पैदा होती है जब हम यह मानने लगते हैं कि हमारा अधिकार और कर्तव्य सबसे उपर है और हमें दूसरों से अधिक अधिकार प्राप्त है। हम अपने विचार और जीवन पद्धति दूसरों पर थोपने की कोशिश करते हैं। हमारा समाज असल में बहुलताबादी है और समाज की बस उसी की ज़रूरत है। हम लोग एकरूपतावादी समाज बनाने का प्रयास कर

रहे हैं। पर, एकरूपतावादी समाज असली समाज नहीं हो सकता। हमें अपने आप को सबसे उपर रखने की सोच से आज़ाद होना होगा। हम किसी क्षेत्र की जनसांख्यकीय स्थिति में तो परिवर्तन नहीं ला सकते हैं। इसलिए हमें मिल-जुल कर रहने की दिशा में रचनात्मक सुधार की तरप ध्यान देना चाहिए।

परिचर्चा से उभरे विचारों को निचौड़ते हुए अध्यक्ष डॉ. एम. डी. थॉमस ने कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को उज़ागर किया, जो कि इस प्रकार है -- 1. हमारे पुर्वजों में आज़ादी की ज्यादा संतुलित समझा थी। 2. ऐसा धर्म जो इंसान को इंसान न बना पाए, वह धर्म किस काम का है! 3. धर्म और धर्म ग्रंथों की समय के अनुकूल व्याख्या होनी चाहिए। 4. हमें धर्म ग्रंथ और भूत काल का गुलाम बनने से बचना चाहिए। 5. हमारा देश पहले से कहीं ज्यादा सांप्रदायिक, सियासती और असहनशील बना हुआ है। 6. भारत के लोग अंग्रेजों की गुणवत्ता से बराबर सीख नहीं पाए। 7. औरों को अपने दबदबे में बाँधकर रखने वी लत अपने आप में गुलामी है और इस परंपरा से आज़ाद होना चाहिए। 8. हम लोग धर्म के ठेकेदारों के गुलाम हैं। 9. हमें धर्म में मौजूद गलत और गैर-ज़रूरी बातों को छोड़ना चाहिए। 10. समाज में राजनीतिक और धार्मिक ध्रुवीकरण बढ़ा है। 11. विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए। 12. नयी-पुरानी पीढ़ीयों के दरम्यान मौजूद फासले को पाटने की दिशा में कदम उठाया जाना चाहिए। 13. सर्व-धर्म समरसता के भाव को बढ़ाया जना चाहिए। 14. अभिव्यक्ति की आज़ादी पर अंकुश लगाने का प्रयास गलत है। 15. खुद्गर्ज और खुद को श्रेष्ठ समझाने की हौड़ से आज़ाद होना होगा। 16. तानाशाही की प्रवृति बीमारी है और उससे आज़ाद होना अहम् है। 17. इन विचारों को अमलीजामा पहनाने के लिए खास तौर पर शिक्षकों और छात्रों के बीच चर्चाओं को आयोजित किया जाना चाहिए।

डॉ. एम. डी. थॉमस ने समापन संबोधन में कहा कि हमें आशावाद को अपनी पूँजी बनाकर गुलामी की परछाइयों को देश और समाज से हटाने के लिए एकजुट होकर काम करना चाहिए। आज़ादी के विविध पहलुओं की दिशा में आगे बढ़ने के लिए हमें अच्छाइयाँ जहाँ कहीं भी दिखे उन्हें अपनाने लायक खुला मन रखना भी चाहिए। अच्छाइयाँ खुदा की देन हैं और मानव समाज की साझी धरोहर हैं। अपना हवाला देकर डॉ. थॉमस ने कहा कि ज्यादा से ज्यादा लोगों से जुड़ने के लिए जैसे उन्होंने अपनो मातृभाषा को दरकिनार कर हिंदी को अपनाया, ठीक उसी प्रकार कुछ बेहतर को हासिल करने की दिशा में भाषा, खानपान, आस्था, धर्म, स्थान, आदि में तब्दीली लाने की राह में किसी को भी आड़ा नहीं आना चाहिए। तंगदिल, दिमाग व रूह को तजकर हमें हर इन्सान की बुनियादी आज़ादी, इज़्ज़त, विकास और भलाई को सामने रखकर देश और धरती पर 'खुदा का परिवार बनाने के सार्वभौम मिशन' में जी-जान से लग जाना चाहिए। जैसे निचली जाति के वाल्मीकी ने देश को 'रामायण' दिया, हम सबका योगदान देश व समाज को बेहतर और ज्यादा जीनेलयक बनाने में बेहद काम आयेगा ही नहीं, नयी पीढ़ियों की रहनुमाई भी करेगा, यह निश्चित है।

आज़ादी और गुलामी के विविध पहलुओं को लेकर चली इस परिचर्चा में विचारों का खुला आदान-प्रदान हुआ ही नहीं, आगे की क्रियात्मक दिशा का कुछ मसौदा भी तैयार हुआ। इंस्टिट्यूट ऑफ हार्मनि एण्ड पीस स्टडोज़, नयी दिल्ली, और इंडियालॉग फाउंडेशन, नयी दिल्ली, के बीच यह सहयोगात्मक कार्यक्रम बहुत सुखद भी रहा। परिचर्चा कुछ ढ़ाई घंटे चली और भोजन के साथ खत्म हुई।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS